शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 26-09-2020, वर्ग - BA-III

मंदी निवारण हेतु प्रयास ⇒

वर्ष 1933 तक हूवर अमेरिका के राष्ट्रपति रहे। उनका हस्तक्षेपवादी नीति में दृढ़ विश्वास था। मंदी निवारण हेतु उन्होंने कोई ठोस कार्यक्रम नहीं अपनाया। सर्वप्रथम उद्योगपतियों की बैठक बुलाकर उनसे सामान्य व्यवसाय तथा मजदूरी की प्रचलित दरें बनाए रखने का आग्रह किया गया। परन्तु जब मूल्यों में निरन्तर ह्रास तथा बेरोजगारी में निरन्तर वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई पड़ी, तब सरकार को सार्वजनिक कार्यों पर व्यय की नीति अपनानी पड़ी। अनाजों तथा कपास की कीमतों को स्थिरता प्रदान करने के उद्देश्य से 'कृषि विपणन अधिनियम (जुलाई 1929 में पारित) के अन्तर्गत 'अनाज स्थिरीकरण निगम' तथा कपास स्थिरीकरण निगम की स्थापना की गई।

कृषि मूल्य के स्थिरीकरण पर सरकार ने लगभग 50 करोड़ डॉलर खर्च किए। किन्तु कोई संतोषजनक परिणाम नहीं मिला। फरवरी 1932 में 50 करोड़ डॉलर की प्रारंभिक पूँजी से 'पुनर्निर्माण वित्त निगम' की स्थापना की गयी, जो मंदी निवारण हेतु हूवर प्रशासन का सबसे प्रभावी उपाय था। निगम ने पहले ही वर्ष में लगभग 30 करोड़ डॉलर ऋण देकर बहुत से बैंकों, बीमा कम्पनियों और रेलवे कम्पनियों को फेल होने से बचाया। सरकार ने बानस विधेयक के अन्तर्गत जरूरतमंद व्यक्तियों को लगभग 100 करोड़ डॉलर की सहायता भी प्रदान की, किन्तु इससे स्थिति में आवश्यक सुधार नहीं हो पाया।

चूँकि हूवर प्रशासन अमेरिकी अर्थव्यवस्था का समुत्थान दूसरे देशों की अर्थव्यवस्था में समुत्थान पर आधारित मानता था। इस लिए प्रशासन ने घाटे की बजट मन्दी निवारण हेतु नहीं अपितु सार्वजनिक आय में अप्रत्याशित ~~कमी~~ कमी के कारण बनाए।

मार्च 1933 में रूजवेल्ट अमेरिका के राष्ट्रपति बने। मंदी निवारण के उद्देश्य से रूजवेल्ट प्रशासन ने अपनी न्यू डील पॉलिसी के अन्तर्गत दो प्रकार के कार्यक्रम लागू किए —

(i) सहायता एवं ~~पुनर्स्थापना~~ पुनरुत्थान कार्यक्रम
(ii) सुधार एवं पुनर्निर्माण कार्यक्रम।

इन कार्यक्रमों का अमेरिकी अर्थव्यवस्था में अनुकूल प्रभाव पड़ा।